



## प्रोजेक्ट चीता

**संदर्भ:** लॉन्च के एक साल बाद, भारत की अफ्रीकी चीतों को जंगल में फिर से लाने की महत्वाकांक्षी पहल 'प्रोजेक्ट चीता' ने अल्पकालिक सफलता की घोषणा की है।

- यह दुनिया की पहली अंतरमहाद्वीपीय बड़े जंगली मांसाहारी पशुओं के स्थानांतरण की परियोजना है।
- इसका लक्ष्य 1950 के दशक से विलुप्त हो चुके चीतों को भारत में फिर से स्थापित करने का है।

### ऐतिहासिक समयेरेखा:

- प्रारंभिक संदर्भ:
  - शास्त्रीय यूनानी अभिलेखों में 200 ईसा पूर्व के आसपास भारत में चीतों का उल्लेख है।
  - मुगल काल में सम्राट अकबर द्वारा शिकार के लिए चीतों का व्यापक उपयोग देखा गया।
- मध्य भारत में चीते:
  - चीते मध्य भारत, विशेषकर ग्वालियर क्षेत्र में मौजूद थे।
  - ग्वालियर और जयपुर सहित विभिन्न राज्यों द्वारा शिकार के लिए इनका उपयोग किया जाता था।
- विलुप्ति:
  - भारत में आखिरी बार चीता 1948 में छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में देखा गया था।
  - 1952 में देश में चीते को विलुप्त घोषित कर दिया गया।
  - महाराजा रामानुज प्रताप सिंह ने अंतिम तीन जीवित चीतों को गोली मार दी थी।

### पुनर्स्थापना के प्रयास:

- 1970 का दशक:
  - ईरान के साथ बातचीत के दौरान प्रारंभिक कदम उठाए गए।
  - एशियाई चीतों के बदले एशियाई शेरों के आदान-प्रदान का प्रस्ताव दिया गया।
- 2009 प्रयास:
  - ईरानी चीतों को प्राप्त करने का असफल प्रयास।
  - ईरान ने अपने चीतों की क्लोनिंग की अनुमति नहीं दी।
- सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप (2012):
  - सुप्रीम कोर्ट ने पुनर्स्थापना परियोजना पर रोक लगाने का आदेश दिया।
- साइट अन्वेषण (2020):
  - दक्षिण अफ्रीका के विशेषज्ञों ने संभावित स्थलों का दौरा किया जिसमें कूनो-पालपुर, नौरदेही वन्यजीव अभयारण्य, गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य और माधव राष्ट्रीय उद्यान शामिल थे।
- आधिकारिक लॉन्च (2022):
  - प्रोजेक्ट चीता आधिकारिक तौर पर प्रधान मंत्री द्वारा लॉन्च किया गया।

### परियोजना की स्थिति:

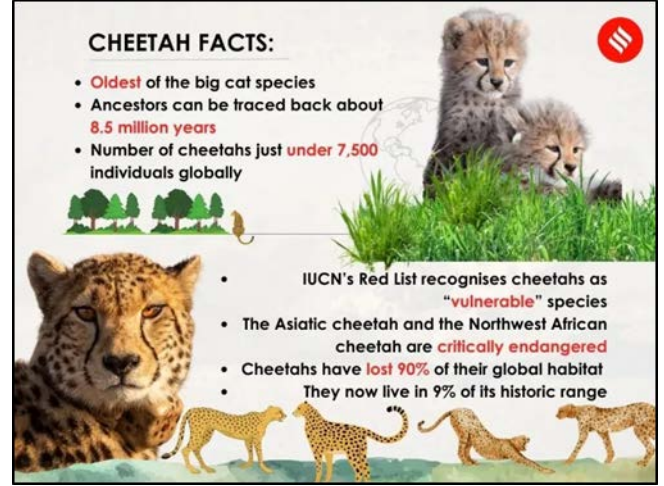
#### पहला बैच (नामीबिया, 17 सितंबर, 2022):

- कूनो पालपुर राष्ट्रीय उद्यान में 8 चीतों का आगमन हुआ।
- जिसमें 6 चीतों की मौत हो चुकी है; शेष में बचे 14 वयस्क और 1 शावक हैं।
- उन्हें फिर से रेडियो-कॉलर करने और सर्दियों में संभावित रिलीज के बारे में चर्चा की जा रही है।
- मध्य प्रदेश में गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य और नौरादेही वन्यजीव अभयारण्य जैसे अतिरिक्त विमोचन स्थलों की तैयारी की जा रही है।

#### दूसरा बैच (दक्षिण अफ्रीका, 18 फरवरी, 2023):

- कूनो पालपुर राष्ट्रीय उद्यान में 12 चीतों का आगमन हुआ।
- मार्च 2023 के अंत में, भारत में एक मादा ने चार शावकों को जन्म दिया।
- 4 में से 3 शावकों की मौत हो चुकी है; मातृ अस्वीकृति के कारण 1 शावक को हाथ से पाला जा रहा है।

**परियोजना का भविष्य:** परियोजना के सफल होने के लिए, इन चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है। यदि ये चुनौतियां दूर की जा सकती हैं, तो परियोजना भारत के वन्यजीव संरक्षण के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी।





## गैर-मेलानोमा (Non-Melanoma) त्वचा कैंसर

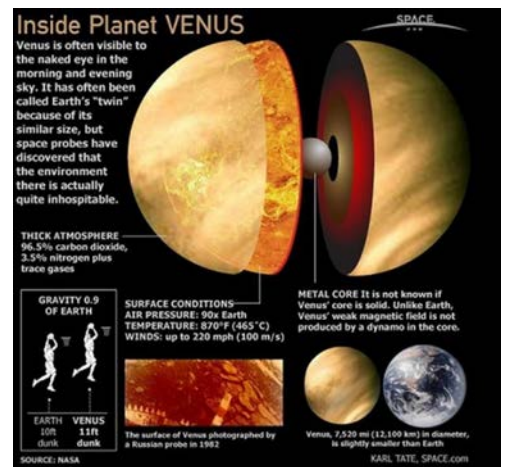
संदर्भ: WHO और ILO के अनुमान के अनुसार, गैर-मेलानोमा त्वचा कैंसर से होने वाली लगभग एक-तिहाई मौतों के लिए सूर्य की पराबैंगनी विकिरण जिम्मेदार है।

- कैंसर से होने वाली मौतों का वैश्विक बोझ:
  - सूर्य की पराबैंगनी विकिरण के व्यावसायिक संपर्क से होने वाली मौतें दुनिया भर में कैंसर से होने वाली मौतों के लिए तीसरा सबसे बड़ा जोखिम कारक है।
- एकसपोजर की सीमा (2019):
  - लगभग 1.6 अरब कामकाजी उम्र के व्यक्ति (15 वर्ष और उससे अधिक) बाहर काम करते समय सौर पराबैंगनी विकिरण के संपर्क में आए।
  - यह वैश्विक कामकाजी उम्र की आबादी का 28% है।
- सूर्य के संपर्क में आने से होने वाली मौतें (2019):
  - काम के दौरान बाहरी धूप के संपर्क में आने के कारण 183 देशों में लगभग 19,000 लोगों की गैर-मेलानोमा त्वचा कैंसर से मृत्यु हो गई।
  - मरने वालों में अधिकांश (65%) पुरुष थे।
- पराबैंगनी सूचकांक दिशानिर्देश:
  - पराबैंगनी सूचकांक तीन या अधिक होने पर सुरक्षात्मक उपाय लागू किए जाने चाहिए।
  - डब्ल्यूएचओ, आईएलओ, विश्व मौसम विज्ञान संगठन और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा हाल ही में लॉन्च किया गया सनस्मार्ट ग्लोबल यूवी एप्लिकेशन बाहरी श्रमिकों को सौर पराबैंगनी विकिरण के जोखिम का अनुमान लगाने में मदद कर सकता है।
- गैर-मेलानोमा त्वचा कैंसर:
  - गैर-मेलानोमा त्वचा कैंसर त्वचा की ऊपरी परत में शुरू होता है।
  - इसके मुख्य प्रकार बेसल सेल कार्सिनोमा (बीसीसी) और स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा (एससीसी) हैं।
  - यह सूरज और सनबेड से आने वाली यूवी रोशनी के कारण होता है।
  - इसके जोखिम कारकों में उम्र, पीली त्वचा और पिछला त्वचा कैंसर शामिल हैं।
  - इसका मुख्य लक्षण असामान्य त्वचा वृद्धि या पैच है।
  - यह सिर, चेहरा, कान, गर्दन, कंधे, पीठ, हाथ, निचले पैर जैसे धूप के संपर्क में आने वाले अंगों में आम है।
  - ये वृद्धि या धब्बे रंग, आकार और बनावट में भिन्न होते हैं।
  - पराबैंगनी विकिरण इसका प्राथमिक कारण है।
  - यह वृद्ध व्यक्तियों में अधिक आम है लेकिन युवा लोगों को प्रभावित कर सकता है।
  - यह पीली त्वचा, लाल/गोरे बाल, नीली/हरी आंखें, कई झाड़ियां/तिल के लोगों के लिए अधिक जोखिमपूर्ण है।
  - अधिक धूप में रहने, धूप से जलने, बार-बार धूप में बैठने के स्थान का उपयोग करने से इसका जोखिम बढ़ जाता है।
  - त्वचा कैंसर का पारिवारिक इतिहास इसके जोखिम को बढ़ाता है।
  - भूरी या काली त्वचा संभावना को कम करती है लेकिन जोखिम को समाप्त नहीं करती है।

## शुक्र ग्रह पर ऑक्सीजन की खोज

संदर्भ: अक्टूबर 2023 में, ऑपरेशन 'नन्हे फरिस्टे' ('Nanhe Faristey') के तहत 601 से अधिक बच्चों को सफलतापूर्वक एकजुट किया।

- पृथ्वी का जुड़वाँ ग्रह शुक्र, जो अपनी दुर्गम परिस्थितियों के लिए जाना जाता है, इसके वायुमंडल में वैज्ञानिकों ने ऑक्सीजन का पता लगाया है।
- पता लगाने की विधि: शुक्र के वायुमंडल में परमाणु ऑक्सीजन का पता SOFIA हवाई वेधशाला में लगे एक उपकरण का उपयोग करके लगाया गया, जो एक संशोधित बोइंग 747SP विमान है जिसमें एक इन्फ्रारेड टेलीस्कोप लगा है।
- सहयोगात्मक परियोजना: यह खोज नासा और जर्मन एयरोस्पेस सेंटर के बीच सोफिया हवाई वेधशाला का उपयोग करते हुए एक संयुक्त परियोजना का परिणाम है।
- शुक्र की वायुमंडलीय संरचना: पृथ्वी के विपरीत, जहां वायुमंडल में ऑक्सीजन लगभग 21% है, शुक्र का वातावरण घना और हानिकारक है जिसमें कार्बन डाइऑक्साइड (96.5%) का प्रभुत्व है।
- खोज का महत्व: परमाणु ऑक्सीजन का पता लगाना, जिसमें एक ऑक्सीजन परमाणु शामिल है, महत्वपूर्ण खोज है क्योंकि सांस लेने के लिए आवश्यक आणविक ऑक्सीजन शुक्र पर लगभग अनुपस्थित मानी जाती रही है।
- शुक्र के दोनों तरफ: शोधकर्ताओं ने शुक्र के दोनों तरफ, सूर्य की ओर वाले तरफ, जहां इसका उत्पादन होता है, और सूर्य से दूर की तरफ, ऑक्सीजन का पता लगाया है।
- उत्पादन तंत्र: शुक्र पर दिन के समय सौर यूवी विकिरण द्वारा वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड को ऑक्सीजन परमाणुओं में तोड़कर ऑक्सीजन का उत्पादन किया जाता है।
- हवाओं द्वारा परिवहन: उत्पादित ऑक्सीजन में से कुछ को हवाओं द्वारा शुक्र ग्रह की रात वाले हिस्से की ओर ले जाया जाता है, जो फोटोकैमिस्ट्री और वायुमंडलीय हवाओं की भूमिका को प्रदर्शित करता है।



## Face to Face Centres



- **वायुमंडलीय परतें:** ऑक्सीजन शुक्र के वायुमंडल की दो परतों के बीच, सतह से लगभग 60 मील (100 किमी) ऊपर केंद्रित है।
- **तापमान भिन्नता:** ऑक्सीजन का तापमान दिन के समय शून्य से 184 डिग्री फारेनहाइट (शून्य से 120 डिग्री सेल्सियस) नीचे और रात के पक्ष में शून्य से 256 डिग्री फारेनहाइट (शून्य से 160 डिग्री सेल्सियस) तक भिन्न होता है।
- **वैज्ञानिक निहितार्थ:** यह खोज फोटोकैमिस्ट्री की क्रिया और शुक्र की वायुमंडलीय हवाओं द्वारा इसके उत्पादों के परिवहन का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रदान करती है।
- **शुक्र के विकास को समझना:** वैज्ञानिक व्यक्त करते हैं कि यह खोज शुक्र के विकास और पृथ्वी से इसके स्पष्ट अंतर को समझने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

### शुक्र:

- शुक्र आकार और संरचना में पृथ्वी के समान है।
- इसका घना वातावरण एक अनियंत्रित ग्रीनहाउस प्रभाव का कारण बनता है, जिससे यह हमारे सौर मंडल का सबसे गर्म ग्रह बन जाता है।
- प्रेम की रोमन देवी के नाम पर शुक्र ग्रह की अधिकांश विशेषताओं का नाम महिलाओं के नाम पर रखा गया है।
- ऊपरी वायुमंडल, लगभग 30 मील ऊपर, में तापमान और दबाव हैं जो सांसारिक जीवन का समर्थन कर सकते हैं।
- शुक्र के बादलों में रहस्यमयी काली धारियों के कारण सूक्ष्मजीवी जीवन की संभावना के बारे में अटकलें लगाई जाने लगी हैं।
- शुक्र लगभग पृथ्वी जितना बड़ा है, इसका कोई चंद्रमा या वलय नहीं है।
- इसके धीमे घूर्णन के परिणामस्वरूप वर्ष की तुलना में एक दिन लंबा होता है, और न्यूनतम झुकाव के कारण इसमें अलग-अलग मौसमों का अभाव होता है।
- गैलीलियो द्वारा देखे गए शुक्र के चरणों ने सूर्य केन्द्रित सौर मंडल का प्रमाण प्रदान किया।
- सोवियत वेनेरा जांच में एक चट्टानी और ज्वालामुखीय सतह का पता चला।
- शुक्र ग्रह पर व्यापक प्रभाव वाले क्रेटर का अभाव है, और इसका वातावरण ज्यादातर सल्फ्यूरिक एसिड बादलों के साथ कार्बन डाइऑक्साइड है।
- अपनी दुर्गम सतह के बावजूद, शुक्र अपने रहस्यों को जानने के लिए भविष्य में होने वाले अन्वेषण का लक्ष्य बना हुआ है।

देश/क्षेत्र	मिशन	वर्ष
अमेरिका	मेरिनर श्रृंखला	1962-1974
	पायनियर वीनस 1 और पायनियर वीनस 2	1978
	मैगलन	1989
रूस	वेनेरा श्रृंखला	1967-1983
	वेगास 1 और 2	1985
जापान	अकात्सुकी	2015
यूरोप	शुक्र एक्सप्रेस	2005

### शुक्र के भविष्य के मिशन

- **शुक्रयान** - भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) शुक्र ऑर्बिटर मिशन (2024 प्रस्तावित)
- **DAVINCI** - नासा शुक्र फ्लाइबाई और जांच (2029)
- **VERITAS** - नासा शुक्र ऑर्बिटर (2031)
- **EnVision** - ईएसए शुक्र ऑर्बिटर (2031)

## NEWS IN BETWEEN THE LINES

### ओगीक (Ogiek) समुदाय



हाल ही में, मानवाधिकार वकीलों का दावा है कि केन्या मऊ वन से ओगीक शिकारी-संग्रहकर्ताओं को जबरन विस्थापित कर रहा है।

#### ओगीक (Ogiek) समुदाय के बारे में:

- ओगीक समुदाय मुख्य रूप से शिकारी-संग्रहकर्ता आरएस से बना है, जिसमें कुछ सदस्य जंगल में गहरे रहते हैं जो पूरी तरह से शिकार और इकट्ठा करने पर निर्भर हैं, जबकि अन्य कृषि और पशुधन रखने में लगे हुए हैं।
- ऐतिहासिक रूप से, ओगीक ने मृग और जंगली सूअर जैसे जानवरों का पारंपरिक शिकार किया है, हालांकि, ये प्रथाएं अब आम तौर पर अवैध हैं।
- उनका केन्या की रिफ्ट घाटी में माउ वन और माउंट एल्वॉन के आसपास के जंगली इलाकों से गहरा ऐतिहासिक संबंध है।
- 1963 में देश को आजादी मिलने के बाद से, ओगीक समुदाय को केन्याई सरकार द्वारा उनकी पैतृक भूमि से बिना किसी परामर्श या मुआवजे के मनमाने ढंग से जबरन बेदखल किया गया है।

### लोटो द्वीप



हाल ही में, जापान के दक्षिणी तट पर लोटो द्वीप (इवो जिमा) के पास समुद्र के नीचे ज्वालामुखी विस्फोट ने वैश्विक ध्यान आकर्षित किया, जिसके कारण एक नए द्वीप का निर्माण हुआ।

#### लोटो द्वीप के बारे में:

- लोटो द्वीप, जिसे इवो जिमा के नाम से भी जाना जाता है, जापान के दक्षिणी तट से लगभग 1 किलोमीटर दूर स्थित है।
- इस नवगठित द्वीप का व्यास लगभग 100 मीटर है और यह समुद्र तल से 20 मीटर तक ऊँचा है।
- इस द्वीप के निर्माण का श्रेय ज्वालामुखी गतिविधि को दिया जाता है, और विशेषज्ञ इसकी "भुरभुरी" संरचना पर ध्यान देते हैं, जिससे यह लहरों से कटाव के प्रति संवेदनशील हो जाता है।
- इवो जिमा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तीव्र लड़ाई के स्थल के रूप में अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है। हाल की ज्वालामुखी गतिविधि इसके महत्व में एक भूवैज्ञानिक आयाम जोड़ती है।
- जापान, इवो जीमा सहित, "पैसिफिक रिंग ऑफ फायर" पर स्थित है, यह क्षेत्र उच्च भूकंपीय और ज्वालामुखी गतिविधि के लिए जाना जाता है, जहां लगभग 1,500 सक्रिय ज्वालामुखी हैं।

### हर्मीस 900 स्टारलाइनर

हाल ही में, भारत इजराइल से अतिरिक्त हर्मीस 900 स्टारलाइनर ड्रोन के अधिग्रहण के बाद अपनी उत्तरी सीमाओं पर सैन्य निगरानी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए तैयार है।

#### हर्मीस 900 स्टारलाइनर क्या है?

## Face to Face Centres







➤ हर्मीस 900 स्टारलाइनर एक इजराइली निर्मित मध्यम-ऊंचाई, लंबे समय तक सहन करने वाला मानव रहित हवाई वाहन (यूएवी) है।

➤ यह हर्मीस 900 यूएवी का बड़ा संस्करण है।

**विशेषताएँ:**

➤ इसके पंखों का फैलाव 17 मीटर है और अधिकतम टेक-ऑफ वजन 1,600 किलोग्राम है।

➤ यह 30,000 फीट की सेवा सीमा और 36 घंटे तक की प्रभावशाली उड़ान सहनशक्ति क्षमता के साथ उल्लेखनीय उड़ान विशेषताओं को प्रदर्शित करता है।

➤ हर्मीस 900 स्टारलाइनर उल्लेखनीय उड़ान विशेषताओं को प्रदर्शित करता है, जिसमें 30,000 फीट तक की सेवा सीमा और 36 घंटे तक की प्रभावशाली उड़ान सहनशक्ति है।

**पेलोड क्षमता:** यह विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए 450 किलोग्राम तक वजन वाले मल्टी-सेंसर पेलोड ले जा सकता है।

**अनुप्रयोग:** हर्मीस 900 स्टारलाइनर अपनी उत्तरी सीमाओं पर भारतीय सेना की निगरानी क्षमताओं को बढ़ाता है।

### सोरायसिस (Psoriasis)



**सोरायसिस के बारे में:**

➤ सोरायसिस एक पुरानी ऑटोइम्यून स्थिति है जो तेजी से त्वचा कोशिका निर्माण की विशेषता को दर्शाता है।

➤ यह निर्माण त्वचा की सतह पर पपड़ी का कारण बनता है, जिसके परिणामस्वरूप खुजलीदार, पपड़ीदार पैच के साथ त्वचा पर दाने हो जाते हैं।

➤ यह आमतौर पर घुटनों, कोहनियों, घड़ और खोपड़ी को प्रभावित करता है।

➤ यह त्वचा पर खुजली, पपड़ीदार धब्बों के रूप में प्रकट होता है, जो दैनिक जीवन को प्रभावित करता है।

➤ यह एक दीर्घकालिक स्थिति है जिसका कोई इलाज नहीं है।

➤ यह स्थिति कई चरणों से गुजरती है, पहले कुछ समय तक बढ़ती रहती है, फिर कम हो जाती है।

➤ यह संक्रामक नहीं है और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में इसे प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

➤ यह अत्यधिक प्रतिक्रियाशील प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण उत्पन्न होता है जिससे त्वचा में सूजन हो जाती है।

**संकेत और लक्षण:**

➤ उभरे हुए, सूजन वाले धब्बे; जो हल्की त्वचा पर लाल और गहरे रंग की त्वचा पर भूरे या बैंगनी रंग के दिखाई देते हैं।

➤ लाल धब्बों पर सफेद-सिल्वर सी परतें या बैंगनी और भूरे धब्बों पर भूरे रंग की पपड़ियां दिखाई देती हैं।

➤ शुष्क त्वचा, खराश, खुजली, जलन, मोटे, गड्ढेदार नाखून और दर्दनाक, सूजे हुए जोड़ इनकी अन्य लक्षण और विशेषताएं हैं।

**नॉन-अल्कोहलिक फैटी लीवर रोग के बारे में:**

➤ नॉन-अल्कोहलिक फैटी लीवर रोग (एनएएफएलडी) लीवर में वसा के संचय के कारण होने वाली कई स्थितियों को संदर्भित करता है।

➤ शराब से संबंधित यकृत रोग के विपरीत, एनएएफएलडी अधिक शराब के सेवन के कारण नहीं होता है।

➤ यह आम तौर पर यकृत क्षति या जटिलताओं का कारण भी नहीं बनता है।

**नॉन-अल्कोहलिक स्टीटोहेपेटाइटिस:**

➤ नॉन-अल्कोहलिक स्टीटोहेपेटाइटिस (NASH) नॉन-अल्कोहलिक फैटी लीवर डिजीज (NAFLD) का एक गंभीर रूप है, जिसमें सूजन और लीवर कोशिका क्षति होती है।

➤ यह आमतौर पर लीवर (फैटी लीवर) में अतिरिक्त वसा के जमा होने से विकसित होता है।

➤ फैटी लीवर से NASH हो सकता है और NASH लीवर की बीमारी को बढ़ने में योगदान दे सकता है।

**लक्षण और दर्द:**

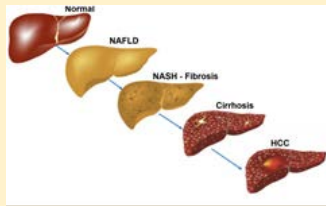
➤ **एनएएफएल लक्षण:** अक्सर लक्षणहीन, लेकिन यकृत वृद्धि के कारण दर्द हो सकता है।

➤ **एनएएसएच लक्षण:** सूजन और क्षति के कारण अधिक ध्यान देने योग्य लक्षण हो सकते हैं।

**जोखिम:**

**रोगों के साथ संबंध:** मोटापा, टाइप 2 मधुमेह और मोटापे से संबंधित बीमारियों वाले व्यक्तियों में यह अधिक जोखिम होना सामान्य बात है।

### नॉन-अल्कोहलिक वसा यकृत रोग (Fatty Liver Disease)





10 November, 2023

## समाचारों में स्थान

### तंजानिया

हाल ही में, आईआईटी मद्रास ने ज़ांजीबार, तंजानिया में अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय परिसर स्थापित करके एक महत्वपूर्ण कार्य किया है।  
**तंजानिया (राजधानी: डोडोमा-Dodoma)**

➤ तंजानिया एक पूर्वी अफ्रीकी देश है जो भूमध्य रेखा के ठीक दक्षिण में स्थित है।

**राजनीतिक सीमाएँ:**

➤ तंजानिया की उत्तरी सीमाएँ युगांडा और केन्या के साथ, इसकी दक्षिणी और दक्षिण-पश्चिमी सीमाएँ मोजाम्बिक और जाम्बिया के साथ तथा पश्चिम में इसकी सीमाएँ बुरुंडी और रवांडा के साथ साझा होती हैं।

**भौगोलिक विशेषताएँ:**

➤ माउंट किलिमंजारो तंजानिया की सबसे ऊंची चोटी है।

➤ तंजानिया कांगो नदी, रुफिजी नदी और रुवुमा नदी जैसी महत्वपूर्ण नदी परिसर में अवस्थित है।

➤ तंजानिया की महत्वपूर्ण झीलों में; पश्चिम में तांगानिका झील, उत्तर में विक्टोरिया झील और मलावी झील (न्यासा झील के नाम से भी जानी जाती है) शामिल हैं।

➤ पूर्वी अफ्रीकी दर्रे के कुछ हिस्से तंजानिया से होकर गुजरते हैं, जिससे नाटकीय ढलान और ज्वालामुखीय विशेषताएँ बनती हैं।



## POINTS TO PONDER

- ❖ भारत में गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ (एनबीएफसी) किस अधिनियम के तहत पंजीकृत हैं? - **कंपनी अधिनियम 1956**
- ❖ कौन सा अधिनियम उन राजनीतिक दलों को नियंत्रित करता है जिन्हें चुनावी ट्रस्टों (ईटी) को अपना योगदान दान करना होगा? - **जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951**
- ❖ कौन सा मंत्रालय भारत में रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (iDEX) की देखरेख करता है? - **रक्षा मंत्रालय**
- ❖ हाल ही में लद्दाख में हानले और मेराक वेधशालाओं में कौन सी घटना घटी थी? - **तीव्र लाल अरोरा (Intense red Aurora) की घटना**
- ❖ कौन सा संगठन वैश्विक उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिए बेजोड़ डेटा, विशेषज्ञता और समाधान प्रदान करता है? - **क्वाक्वेरेली साइमंड्स ( Quacquarelli Symonds - QS)**

## Face to Face Centres

